अध्याय VI: ईश्वर का राज्य (THE KINGDOM OF GOD)

> **"**हरि ओम्**!** अब**,** ब्रह्म के इस निवास **(**मानव शरीर**)** के भीतर एक छोटा कमल जैसा कक्ष है**,** और उसके भीतर एक सूक्ष्म शून्यता **(**अन्तराकाश**)** है। उस शून्यता के भीतर जो कुछ है वह खोज के योग्य है**:** वास्तव में**,** उसी की खोज की जानी चाहिए।**"**
> — छान्दोग्य उपनिषद्**, VIII. 1. 1**

> **"**यहाँ हृदय में एक गुहा है**,** जिसमें वह निवास करता है**,** जो ब्रह्मांड का स्वामी है**,** ब्रह्मांड का शासक है**,** ब्रह्मांड का अधिपति है।**"**
> — बृहदारण्यक उपनिषद्**, IV. 4. 22**

इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि ईसाई धर्म के संस्थापकों ने मानव जाति को जो संदेश देना चाहा था, वह साधारण समाज तक नहीं पहुँच पाया। इस विफलता का मुख्य दोष उस रहस्यमयी और रूपकात्मक शैली **(Allegorical diction)** पर मढ़ा जाना चाहिए जिसके आवरण में वास्तविक सत्य को छिपाया गया था।

ईसा मसीह के प्रारंभिक जीवन का आध्यात्मिक रूपक

ईसा मसीह के प्रारंभिक जीवन के विवरण को ऐतिहासिक रूप से पढ़ना हमें भ्रमित करता है। मैथ्यू (पहला गॉस्पेल) के अनुसार, शिशु ईसा को हेरोद (Herod) के अत्याचार से बचाने के लिए मिस्र ले जाया गया था और वे वहाँ तब तक रहे जब तक कि अत्याचारी हेरोद मर नहीं गया। परंतु, ल्यूक (तीसरा गॉस्पेल) इस कहानी का सीधे खंडन करता है और बताता है कि ईसा और उनके माता-पिता लगातार नासरत (Nazareth) में ही रहे और प्रतिवर्ष पासओवर (Passover) के त्योहार पर यरूशलेम जाते रहे। मार्क तो ईसा के बचपन पर पूरी तरह मौन है और अपने गॉस्पेल की शुरुआत सीधे जॉर्डन नदी पर जॉन बैपटिस्ट के प्रकट होने से करता है।

यदि हम इसे इतिहास मानेंगे, तो हम कभी तय नहीं कर पाएंगे कि कौन सा गॉस्पेल सच है। परंतु मिस्र (Egypt) की इस यात्रा और प्रवास का वास्तविक स्पष्टीकरण उस प्राचीन भविष्यवाणी की पूर्ति में छिपा है जो कहती है: **"**मिस्र में से मैंने अपने पुत्र को बुलाया है**"** (मैथ्यू ii. 15)।

- मिस्र **(Egypt) =** संसार **(The World):** आध्यात्मिक विज्ञान में मिस्र 'भौतिक संसार' का प्रतीक है। विजेता आत्मा (The Conquering Soul) को वास्तव में इसी संसार रूपी "मिस्र" से बाहर निकलना होता है!
- हेरोद **(Herod) =** शारीरिक अहंता **(The physical self / Ego):** हेरोद उस भौतिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है जो वास्तविक अमर आत्मा (The true Self) का विरोधी और शत्रु है। वह अपने सांसारिक साम्राज्य और इंद्रिय-सुखों की रक्षा के लिए आत्मा की हर नई आध्यात्मिक प्रवृत्ति (नवजात शिशुओं) को नष्ट करना चाहता है।

परंतु, यह 'वास्तविक आत्मा' गुप्त रूप से विकसित होती है और तब प्रकट होती है जब उसके आंतरिक शत्रु पराजित हो जाते हैं, जैसा कि भजन संहिता (Psalm cx. 1) में कहा गया है: **"**प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा**,** तू मेरे दाहिने हाथ बैठ**,** जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ।**"**

जॉन द्वारा बपतिस्मा और प्रलोभन **(Baptism & Temptation)**

आध्यात्मिक यात्रा का अगला महत्वपूर्ण चरण आत्मा का बपतिस्मा (दीक्षा) है। जॉन बैपटिस्ट और ईसा मसीह के संबंधों को इतिहास के रूप में पढ़ना व्यर्थ है। बपतिस्मा वास्तव में आंतरिक शुद्धि और दीक्षा **(Initiation and purification)** की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से आगे बढ़ती हुई आत्मा दिव्य महिमा को प्राप्त करती है। इस प्रक्रिया के तुरंत बाद आत्मा एक नए उत्साह से भर जाती है जो उसे 'जंगल' की ओर धकेलता है।

- जंगल **(The Forest) =** सांसारिक विरक्ति **(World flight / वैराग्य):** बपतिस्मा के बाद आत्मा एकांत साधना और संसार के त्याग की ओर बढ़ती है।
- प्रलोभक **(The Tempter) =** वासनायुक्त मनस् **(The pleasure-seeking lower mind):** एकांत में आत्मा को असाधारण मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ (सिद्धियाँ/Occult powers) प्राप्त होती हैं। यहाँ प्रलोभक (मनस्) पुनः फुसफुसाता है: *"तुम इन शक्तियों का उपयोग करके संसार के चक्रवर्ती सम्राट क्यों नहीं बन जाते? भौतिक सुखों का भोग करो!"*
- प्रलोभन का मूल्य**:** इसके लिए आत्मा को केवल अपनी वासनाओं के सामने घुटने टेकने (प्रलोभक को पूजने) की आवश्यकता होती है। परंतु विजेता बनने की राह पर अग्रसर आत्मा इन तुच्छ प्रलोभनों को अस्वीकार कर देती है।

इस प्रकार सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र से सुसज्जित होकर आत्मा संसार में सत्य के शिक्षक के रूप में प्रकट होती है। अब वह **"**संसार में तो है**,** पर संसार की नहीं है**"**। उसका जीवन अब दूसरों के पापों के प्रायश्चित के लिए "बलिदान" (एक महान मार्गदर्शक उदाहरण) बन जाता है।

ईश्वर के राज्य की वास्तविक प्रकृति

ईसा मसीह ने जिस 'ईश्वर के राज्य' का उपदेश दिया था, वह कोई भौगोलिक स्वर्ग नहीं है जो मृत्यु के बाद आकाश में कहीं मिलेगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी:

> **"**ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है।**"** (ल्यूक xvii. 21)

यह राज्य किसी बाहरी अवलोकन (observation) से दिखाई नहीं देता। परंतु अज्ञानी व्याख्याकारों ने अपनी असमर्थता के कारण इसे एक भौगोलिक स्थान बना दिया जहाँ लोग मृत्यु के बाद हाड़-मांस के शरीर के साथ उठकर विलासिता का भोग करेंगे। क्या किसी बाहरी स्थान में रहने मात्र से आत्मा को सच्चा आनंद मिल सकता है?

ईसा मसीह ने अपनी महान घोषणा में कहा था: **"**धन्य हैं वे जो मन के दीन **(meek)** हैं**,** क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।**"** (मैथ्यू v. 5)। यदि प्रलय के दिन यह भौतिक पृथ्वी नष्ट ही होने वाली है, तो इन पवित्र आत्माओं को उत्तराधिकार में क्या मिलेगा? वास्तविक अर्थ यह है कि अपने भीतर के देवत्व (Godhood) को पहचानकर आत्मा इसी पृथ्वी पर रहते हुए पूर्ण शांति और परमानंद को प्राप्त कर सकती है।

अंगों को काटने का आध्यात्मिक रहस्य

गॉस्पेल में एक अत्यंत कठिन और गंभीर निर्देश मिलता है:

> **"**यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे भटकाए**,** तो उसे काट डाल और अपने से दूर फेंक दे**;** तेरे लिए यह अच्छा है कि तू टुंडा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करे**,** बजाय इसके कि दो हाथ या दो पैर होते हुए तू अनंत आग में डाल दिया जाए। और यदि तेरी आँख तुझे भटकाए**,** तो उसे निकाल कर फेंक दे**...****"** (मैथ्यू xviii. 8-9)

यदि हम इसे शाब्दिक रूप से लेंगे, तो क्या स्वर्ग में केवल अंधे, लंगड़े और अपाहिज लोग ही प्रवेश करेंगे? बिल्कुल नहीं!

- हाथ**,** पैर और आँख**:** ये हमारे भौतिक शरीर के अंग नहीं हैं, बल्कि यह मन की विकृत वासनाओं और प्रवृत्तियों **(Perverse propensities)**का प्रतीक हैं जो पूरे मनुष्य को संचालित करती हैं। जब तक इन वासनाओं का दमन (प्लकिंग आउट/काटना) नहीं किया जाता, तब तक संपूर्ण आत्मा नर्क (अज्ञानता, तड़प और दुःख की स्थिति) में गिरती रहेगी।
- जीवन में प्रवेश करना **(Entering into life):** इसका अर्थ है 'अमरता' (Immortality) प्राप्त करना। अमरता इसी जीवन में प्राप्त होनी चाहिए।
- स्वर्ग और नर्क की स्थिति**:** जहाँ 'सत्-चित्-आनंद' का प्रकाश चमकता है, वहीं स्वर्ग है; और जहाँ अज्ञानता का अंधकार है, वहीं नर्क की तड़प है।

ईसा मसीह ने कहा था: **"**कोई भी मनुष्य स्वर्ग पर नहीं चढ़ा**,** केवल वही जो स्वर्ग से उतरा**,** अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।**"** (यूहन्ना iii. 13)।

यहाँ 'मनुष्य का पुत्र' (Son of man) स्वयं हमारी आंतरिक आत्मा **(The Real Self)** है। वह शरीर रूपी अशुद्धियों के नीचे दबी होने के बावजूद मूलतः शुद्ध और आनंदमयी है, अर्थात् हमेशा 'स्वर्ग' में ही स्थित है।

पुनरुत्थान और सदूकियों का प्रश्न **(Dialogue with the Sadducees)**

सदूकी (Sadducees) पुनरुत्थान के सिद्धांत को नहीं मानते थे। उन्होंने ईसा मसीह को फंसाने के लिए एक काल्पनिक प्रश्न पूछा: *"*एक स्त्री ने सात भाइयों से क्रमशः विवाह किया। पुनरुत्थान के दिन वह किसकी पत्नी होगी*?"*

ईसा मसीह ने उत्तर दिया:

> **"**इस संसार के लोग तो विवाह करते हैं**...** परंतु जो उस संसार के और मरे हुओं में से उठने के योग्य गिने जाएंगे**,** वे न तो विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे। वे फिर कभी मर भी नहीं सकते**,** क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हो जाते हैं और पुनरुत्थान की संतान होने के कारण ईश्वर की संतान हैं।**"** (ल्यूक xx. 34-36)

इस उत्तर से ईसाई चर्च का वह पुनरुत्थान सिद्धांत पूरी तरह खंडित हो जाता है जो मानता है कि प्रलय के दिन सभी लोग कब्रों से अपने भौतिक शरीरों के साथ उठ खड़े होंगे।

1. लिंगहीन देवत्व **(Sexless Divine Status):** मुक्ति की स्थिति में आत्मा का कोई भौतिक शरीर नहीं होता, इसलिए वहाँ यौन क्रियाओं या विवाह का कोई स्थान नहीं है। आत्मा स्वभाव से लिंगहीन (sexless) है।

2. केवल सुयोग्य व्यक्तियों के लिए पुनरुत्थान: ईसा ने स्पष्ट किया कि यह पुनरुत्थान सबके लिए नहीं है, बल्कि केवल उन चुनिंदा लोगों के लिए है जो इसके "योग्य" गिने जाएंगे। यह पुनरुत्थान कुछ और नहीं, बल्कि आत्मा का जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना (निर्वाण) है!
3. मृतकों का नहीं, जीवितों का ईश्वर: ईसा ने घोषित किया: "वह मृतकों का नहीं, परंतु जीवितों का परमेश्वर है: क्योंकि उसके लेखे सब जीवित हैं।" इसका दार्शनिक अर्थ यह है कि अब्राहम, इसाक और याकूब जैसे प्राचीन पुरुष समाप्त नहीं हुए हैं; उनके भौतिक शरीर नष्ट हो चुके हैं परंतु उनकी आत्माएँ ब्रह्मांड में आज भी सक्रिय और जीवित हैं। यह पुनर्जन्म (Transmigration) के सिद्धांत की ओर सीधा संकेत है!

कृष्ण और गोपियों का समांतर रहस्य **(The Metaphor of Krishna)**

यही मसीहाई रहस्य (Messiah concept) हिंदू दर्शन में श्रीकृष्ण और गोपियों के रूप में चित्रित है।

यदि श्रीकृष्ण के चरित्र को ऐतिहासिक रूप से पढ़ा जाए, तो रात्रि के घोर अंधकार में गोपियों को उनके पतियों के बिस्तरों से बुलाना और यमुना के तट पर उनके साथ नृत्य करना नैतिक दृष्टि से अत्यंत आपत्तिजनक प्रतीत होगा। परंतु आध्यात्मिक और रहस्यमयी भाषा में इसके गहरे अर्थ हैं:

- गोपी **(Gopi) =** व्यक्तिगत आत्मा **(The Individual Soul):** आत्मा अपने भौतिक संबंधों (पतियों) को भूलकर, पूर्ण एकांत में (रात्रि के समय), अपने आराध्य देव की ओर दौड़ती है।
- वस्त्रों का हरण **(Stripping of clothes):** जब आत्मा अपने अंतिम उद्धार के लिए तैयार होती है, तो उसे अपनी सांसारिक संपत्ति और झूठे शारीरिक अभिमान (वस्त्रों) का त्याग करना पड़ता है। वह संसार के भय से मुक्त होकर, अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाकर (पूर्ण समर्पण भाव में) अपने आराध्य के सामने खड़ी होती है, तब उसे 'मसीहा' या 'जिन' (विजेता) के शाश्वत प्रेम की प्राप्ति होती है।

पहाड़ी उपदेश और भावनाओं का विज्ञान **(The Sermon on the Mount & Science of Emotions)**

ईसा मसीह के पहाड़ी उपदेश (Sermon on the Mount) के नियम अत्यंत व्यावहारिक और वैज्ञानिक हैं।

- **"**मन के दीन धन्य हैं**" (Poor in spirit):** इसका अर्थ जबरन थोपी गई गरीबी नहीं है। इसका अर्थ है—वह व्यक्ति जिसने स्वेच्छा से अपनी भौतिक इच्छाओं और धन-दौलत के प्रति आसक्ति का त्याग कर दिया है। इच्छाओं का त्याग करने से आत्मा का बोझ हल्का हो जाता है और उसका स्वाभाविक आनंद (Ananda) प्रकट होता है।
- **"**बुराई का सामना मत करो**" (Do not resist evil):** यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसकी ओर फेर दो। यदि कोई तुम्हारा कुर्ता मांगे, तो उसे अपना कोट भी दे दो।
    - वैज्ञानिक आधार: जब कोई क्रोधित व्यक्ति आप पर प्रहार करता है, तो उसके भीतर से अत्यंत हानिकारक और विषैली तरंगें (vibrations) निकलती हैं। यदि आप भी क्रोध से उत्तर देंगे, तो घर्षण (friction) बढ़ेगा और आपकी आत्मा दूषित होगी। परंतु यदि आप शांत रहकर मैत्रीपूर्ण तरंगें भेजेंगे, तो शत्रु का क्रोध शांत हो जाएगा।
    - शारीरिक प्रभाव: आधुनिक मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान ने प्रमाणित किया है कि क्रोध, ईर्ष्या और नफरत जैसी भावनाएँ शरीर में विषैले पदार्थों (toxins) का स्राव करती हैं जो हृदय रोग और

सिरदर्द का कारण बनती हैं। इसके विपरीत, प्रेम और दया की भावनाएँ शरीर में स्वास्थ्यवर्धक स्राव (antitoxins) उत्पन्न करती हैं।

भावनाओं का वर्गीकरण **(**तालिका**)**

प्रेम **(**आकर्षण **/** सकारात्मक**)**	नफरत **(**प्रतिकर्षण **/** नकारात्मक**)**
आज्ञाकारिता (Obedience)	दासता (Servility)
विश्वास (Confidence)	भड़कना / क्रोध (Fury)
पवित्रता (Holiness)	पाखंड (Hypocrisy)
सत्यता (Truthfulness)	झूठ बोलना (Lying)
कोमलता (Tenderness)	गलतफहमी (Misunderstanding)
संतोष (Contentment)	निराशा / उदासी (Moroseness)
दया / दानशीलता (Charity)	निर्दयता (Unkindness)
सहिष्णुता (Toleration)	विद्रोह (Rebelliousness)

इसलिए, अहिंसा (Ahimsa) कोई केवल नैतिक नियम नहीं है, बल्कि यह आंतरिक सुख और स्वास्थ्य प्राप्त करने का परम वैज्ञानिक नियम है! जो व्यक्ति मूक पशुओं की हत्या करके उनका मांस खाता है, वह अपनी आत्मा के चारों ओर एक अत्यंत कठोर और क्रूर कर्म-आवरण (shell of karma) का निर्माण करता है, जिससे वह कभी मुक्त नहीं हो पाता।

सुशासन का सिद्धांत और सादी के वचन

सच्चे सुशासन के संबंध में फारस के महान कवि और नैतिक दार्शनिक शेख सादी (Sa'di of Sheeraz) ने दो अत्यंत सुंदर शेर लिखे हैं:

> **"**रैयत चूं बेख़ अस्त ओ सुल्तां दरख़्त**,**
> दरख़्त ऐ पिसर बाशद अज़ बेख़ सख़्त।**"**
> **"**मकुन ता तवानी दिल**-**ए**-**ख़ल्क रेष**,**
> वगर मी**-**कुनी मी**-**कनी बेख़**-**ए**-**खेश।**"**

*(*अर्थात्*:* जनता जड़ के समान है और राजा वृक्ष के समान*;* हे पुत्र*!* वृक्ष की शक्ति उसकी जड़ पर निर्भर करती है। जहाँ तक हो सके लोगों के दिलों को ठेस मत पहुँचाओ*;* क्योंकि यदि तुम ऐसा करते हो*,* तो तुम अपने ही वृक्ष की जड़ काट रहे हो।*)*

आधुनिक राजनीति केवल सैन्य शक्ति, हथियारों और कूटनीति पर टिकी है। परंतु ईसा मसीह ने चेतावनी दी थी: **"**ईश्वर का राज्य तुमसे छीन लिया जाएगा और उस जाति को दे दिया जाएगा जो उसके योग्य फल लाएगी।**"** (मैथ्यू xxi. 43)। सुशासन केवल तभी स्थिर रह सकता है जब वह प्रेम, न्याय और सत्यता की नींव पर आधारित हो।

आसक्ति का त्याग और **'**स्वप्न**'** का दृष्टांत

मुक्ति के मार्ग पर सबसे बड़ी बाधा शारीरिक आसक्ति (Attachment) है। इसलिए ईसा मसीह ने कहा था:

> **"**जो कोई अपने पिता या माता को मुझसे अधिक प्यार करता है**,** वह मेरे योग्य नहीं है**..."** (मैथ्यू x. 37)

यहाँ 'मुझसे' (me) का अर्थ भौतिक ईसा से नहीं, बल्कि हमारे भीतर स्थित दिव्य अमर आत्मा **(Christos)** से है।

संसार एक स्वप्न के समान है

इस आसक्ति को दूर करने के लिए वेदांत का स्वप्न का दृष्टांत अत्यंत उपयोगी है।

जब हम सो रहे होते हैं, तो हम एक स्वप्न देखते हैं। उस स्वप्न में हम खुद को एक पात्र (actor) मानते हैं। हम वहाँ सुख-दुःख का अनुभव करते हैं, राक्षसों या खलनायकों से डरते हैं, और जब कोई खलनायक हमारी छाती में खंजर घोंपने वाला होता है, तो हम अत्यंत भयभीत होकर चिल्ला उठते हैं! परंतु जैसे ही हमारी आँख खुलती है, हम खुद को सुरक्षित बिस्तर पर पाते हैं और मुस्कुराते हैं!

- सृष्टिकर्ता कौन था**?** वह पूरा स्वप्न-जगत, वह नायक, वह खलनायक और वह भय—सब कुछ हमारे अपने ही मन (कल्पना) की रचना थी!
- हम क्यों डरे**?** क्योंकि हम भूल गए थे कि हम स्वयं उस नाटक के लेखक और सृष्टिकर्ता हैं! हमने खुद को उस काल्पनिक दुनिया के स्तर पर गिरा लिया था।

यही स्थिति इस जागृत संसार की भी है। हम अज्ञानता के कारण इस भौतिक संसार को सच मान बैठे हैं और इसके क्षणभंगुर दृश्यों से डर रहे हैं। जैसे ही हम इस सत्य को पहचान लेंगे कि हम स्वयं 'सृजनात्मक इच्छाशक्ति' (Creative Will) हैं, हम इस संसार रूपी मंच के केवल **'**दर्शक**' (Spectator/**द्रष्टा**)** बन जाएंगे और सभी दुखों से ऊपर उठ जाएंगे!

बपतिस्मा**,** सामायिक और प्रार्थना का सत्य

1. बपतिस्मा **(Baptism) =** आध्यात्मिक नया जन्म **(Second Birth):** इसका अर्थ केवल पानी से नहलाना नहीं है, बल्कि अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश में प्रवेश करना है। इसे भारतीय संस्कृति में **'**द्विज**' (Two-born /** दूसरा जन्म**)** कहा जाता है।
2. प्रार्थना **(Prayer)** की निरर्थकता**:** देयवादी धर्मों में की जाने वाली 'याचनात्मक प्रार्थना' (भीख मांगने जैसी प्रार्थना) वैज्ञानिक रूप से निरर्थक है। एक सर्वज्ञ और दयालु ईश्वर को बार-बार अपनी समस्याओं को याद दिलाने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? प्रार्थना अंधविश्वास और अज्ञानता की जननी है।

3. सामायिक **(Samayika)** ही सच्ची साधना है**:** जैन दर्शन में वर्णित 'सामायिक' ही ध्यान की वैज्ञानिक विधि है। सामायिक का अर्थ है—प्रतिदिन कम से कम ४८ मिनट (अंतर्मुहूर्त) के लिए सभी सांसारिक पापों और राग-द्वेष का त्याग करके, समता भाव (Equanimity) में स्थिर होना।

प्रार्थना और सामायिक का तुलनात्मक विश्लेषण

प्रार्थना **(Deistic Prayer)**	सामायिक **(Samayika Meditation)**
किसी बाहरी ईश्वर से अपने पापों की क्षमा और सुख-समृद्धि की भीख मांगना।	स्वयं के पुरुषार्थ से पापों को रोकने का संकल्प करना और पश्चात्ताप करना।
किसी क्रोधी और संकीर्ण निर्माता की चापलूसी करना, जिसका कभी कोई मनुष्य समान नहीं बन सकता।	उन तीर्थंकरों (मुक्त आत्माओं) की स्तुति करना, जो स्वयं हमारे समान मनुष्य थे और जिन्होंने पुरुषार्थ से मोक्ष पाया।
स्वयं को पापी, हीन और दीन मानना, जो आत्म-विकास को रोकता है।	शरीर और आत्मा के भेद को पहचानना, और स्वयं को ही 'ईश्वर' के रूप में अनुभव करना।

स्वामी रामतीर्थ ने ईसा मसीह की प्रसिद्ध प्रार्थना **"**हमें आज हमारी दैनिक रोटी दे**"** (Give us this day our daily bread) की अत्यंत सुंदर व्याख्या की है:

> *"*इसका अर्थ भीख मांगना नहीं है। इसका अर्थ है—त्याग *(Renunciation)*। जब एक सम्राट भी सुबह उठकर यह प्रार्थना करता है*,* तो वह अपने सारे महलों*,* रत्नों और राजपाट को ईश्वर को समर्पित कर देता है और स्वयं को केवल एक *'*ट्रस्टी*'* मानता है। वह कहता है—*'*यह सब मेरा नहीं*,* प्रभु आपका है*'*।*"*

निष्कर्ष

जब ज्ञान की इस **'**कुंजी**' (The Key of Knowledge)** को हमारे अज्ञान के तालों पर लगाया जाता है, तो भ्रम के सारे कपाट टूट जाते हैं, और मनुष्य अपने शुद्ध, पापरहित रूप में प्रकट होता है! तब वह जान जाता है कि वह कोई मिट्टी की कठपुतली नहीं, बल्कि स्वयं सत्-चित्-आनंद **(SAT-CHIT-ANANDA)** परमात्मा है!